अजब दास्ताँ

(Ajab Daastaan)

Dr. Waseem Siddiqi
डा0 वसीम सिद्दीक़ी
10/8Th Road North
Ahmadi.61008
Kuwait

मोहन की कार कृष्ण गढ़ क़स्बे में दाख़िल हो चुकी थी। इसकी नज़रें अब कार के शीशे से निकल कर इधर उधर की चीज़ की मुतलाशी थीं और फिर उसने सड़क के किनारे बने हुये एक होटल के सामने गाड़ी रोक दी आओ रूपा यहाँ चाय पी जाये और फिर रेडीटर में पानी भी डाल लेंगे इंजन भी क़ाफी गर्म हो गया है और तुम किशन के लिये दूध भी ले लेना।

वह गाड़ी से उतर आया उसकी बीवी रूपा भी अपने 2 साल के बच्चे किशन को लिये गाड़ी से उतर आयी मुसलसल कई घन्टे सफ़र की वजह से उसके चेहरे पर तकान के आसार साफ़ नज़र आ रहे थे। वह फिर होटल के बाहर पड़ी हुई कुर्सी पर बैठ गयी। मोहन गाड़ी में पानी डालने लगा उसी वक़्त मग़रीब की आज़ान की आवाज़ आने लगी और रूपा ने सर पर साड़ी का आंचल अच्छी तरह डाल लिया। यह उसकी आज की नही बहुत पुरानी आदत थी। उस वक़्त से जब वह आठवें क्लास में पढ़ रही थी और उसकी सहेली थी निखहत जो कि उसकी सहेली और पड़ोसी भी थी वह निखहत के यहाँ खेलने भी जाया करती थी। जब कभी भी आज़ान की आवाज़ आती थी निखहत उसकी अम्मी और छोटी बहन सब के सब सर पर दुपट्टा डाल लिया करती थीं। उनकी देखा देखी वह भी सर पर दुपट्टा डाल लेती थी उसके बाद निखहत के अब्बा का ट्रान्सफ़र हो गया अब वह सब किसी दूसरे शहर चले गये लेकिन रूपा की आज़ान सुनते ही सर पर आँचल डालने की आदत पड़ चुकी थी। उसके घर वालों और माँ बाप ने भी उसकी इस आदत को नोट किया था उसके बाप तो उसको आज़ान के वक़्त सर पर दुपट्टा डालते देखकर सिर्फ़ मुस्कुरा कर रह जाते थे लेकिन उसकी माँ जी कभी उसकी इस हरकत को तशवीश से देखती कभी सोचती थीं कि चलो अच्छा है हर वक़्त डाँव–डाँव फिरा करती है दुपट्टा कहाँ जा रहा है ख़ुद कहाँ जा रही हैं कुछ होश ही नहीं कम अज़कम आज़ान के वक़्त तो यह दुपट्टा वग़ैरह से दुरूस्त होकर कुछ मुहज़ब हो जाती है। उसके बाद उसने हाई स्कूल किया, इन्टर किया, बी–ए किया और फिर उसकी शादी हो गयी लेकिन उसकी आज़ान के वक़्त सर पर दुपट्टा डालने की आदत नही छूटी। उसकी इस आदत को शादी के फ़ौरन बाद ही मोहन ने नोट किया वह बहुत आज़ाद ख़्याल था लेकिन ऐसा भी क्या कि पन्डित ब्रिज शंकर की बहू आज़ान के वक़्त बा–अदब होकर सर पर आँचल डाल ले लेकिन शादी के बाद नया नया मामला था वह एतराज़ करके अपनी बीवी को नाराज़ नही करना चाहता था। लेकिन जिस दिन उसने महसूस किया कि उनके मामलात पुराने हो चुके हैं उसने रूपा की इस आदत पर सख़्त एतराज़ किया। और उस दिन दोनों में खूब जम कर लड़ाई हुई रूपा ने कहा साड़ी का पल्लू सर पर डालने से मुसलमान तो नही हो गयी और तुम चले एतराज़ करने जिसने सालों से मन्दिर की शक्ल नही देखी होगी मोहन ने सोचा वाक़ई उसने बहुत ग़लत एतराज़ किया। रूपा तो भगवान से डरने वाली औरत है उसके बाद से फिर उसने रूपा की इस आदत पर दोबारह एतराज़ नही किया।

एक दिन तो रूपा को बहुत मज़ेदार तजुर्बा हुआ वह एक पार्टी में गयी थी काफ़ी औरतें इकट्ठा थीं खूब शोर शराबा और हंगामा था तब ही पास की मस्जिद से आज़ान की आवाज़ आने लगी दूसरी तरफ़ रूपा भी

टाँय–टाँय बोले जा रही थी। आज़ान की आवाज़ सुनते ही वह एक दम ख़ामोश हो गयी और सर पर आँचल डाल लिया तब ही एक बूढ़ी उसकी तरफ़ मुतावज्जे हुई देखिये आप ज़रूर किसी अच्छे ख़ानदान की लड़की हैं वह बूढ़ी फिर उसकी तरफ़ देखकर बोली बेटी शादीशुदा हो इससे पहले कि रूपा कोई जवाब देती वह टटोलती नज़रों से उसका मुआयना कर चुकी थीं। बोलीं हाँ शादी शुदा लगती हो क्या नाम है तुम्हारे शौहर का।

जी मोहन मोहन कुमार रूपा ने जवाब दिया ऐ–हे नास लगाई इसको कोई मुसलमान लड़का ही नही जुड़ा–या अल्लाह कैसा ज़माना आ गया हैं। कैसी कैसी शरीफ़ लड़कियाँ भटक जाती हैं। बूढ़ी अपने गाल पीटती हुई चली गयी और रूपा उनके जाने के बाद काफ़ी देर तक हँसती रही। रूपा ने सोचा बूढ़ी को कैसी ग़लत फ़हमी हुई वह उसे मुसलमान समझती रहीं।

आज़ान ख़त्म हो चुकी थी और रूपा का आँचल सर से ढुलक गया था। होटल वाले लड़के ने उसे और मोहन को चाय लाकर पकड़ा दी थी भद्दी मोटी चाय की प्यालियों को देखकर रूपा ने मुँह तो ज़रूर सिकोड़ा लेकिन चाय पीने लगी। अब रूपा मस्जिद के दरवाज़े के पास देख रही थी वहाँ कई औरतें अपनी अपनी गोद में छोटे छोटे बच्चों को लिये चली आ रही थीं। और वहीं खड़ी थीं रूपा सोचने लगी कि यह औरतें मस्जिद के दरवाज़े के बाहर क्यों जमा हैं और थोड़ी ही देर में उस पर उक़दा खुल गया नमाज़ ख़त्म हो चुकी थी नमाज़ी मस्जिद के दरवाज़े से बाहर निकलते जा रहे थे और औरतों के गोद में लिये हुये बच्चों पर दम करते जा रहे थे अच्छा तो यह औरतें इन बच्चों को फुँकवाने लाती हैं इन औरतों में बड़े बड़े टीके और माँग में सिन्दूर से साफ़ लग रहा था कि उसकी हम मज़हब औरतें भी हैं। उसकी समझ में नही आया कि इन हिन्दू औरतों का क्या अक़ीदा है कि वह अपने बच्चों को मुसलामन नमाज़ियों से दम करा रही हैं वह काफी हैरत में थी और आख़िर उसने होटल वाले से पूछ ही लिया कि यह क्या चक्कर है होटल वाले ने कहा कि बीबी जी यह एतिक़ाद की बात है यहाँ तो रोज़ ही औरतों की भीड़ लगी रहती है यह सभी अपने बच्चों को दम करवाने के लिये लाती हैं कभी कभी तो औरतों की लाईन लग जाती है।

कल ही एक औरत अपनी फीएट कार में बैठ कर आयी थी। रूपा ने मस्जिद की तरफ़ देखा अब भी इक्का दुक्का लोग मस्जिद से निकल रहे थे। उसने सोचा अपने किशन को भी फुँकवाले वह काफ़ी दुबला है और बीमार भी रहता है लेकिन फिर मोहन इसको पसन्द नही करेगा यह सोच कर उसने अपनी ख़्वाहिश का गला घोंट दिया।

हाँ भाई यह डाक बंगला किस तरफ़ है मोहन होटल वाले से पूछ रहा था मोहन और रूपा डाक बंगला पहुँच गये थे। अच्छी ख़ासी रात हो चुकी थी मोहन जयपुर में मुनसिफ़ मजिस्ट्रेट था उसका तबादला किशन गढ़ में हो गया था और कल ही उसको यहाँ जुवाईन करना था सरकारी मकान मिलने में कुछ वक़्त लगता है इसलिये उसने डाक बंगला को ही ग़नीमत जाना और दूसरे डाक बंगला भी काफ़ी आराम देह था। रात का खाना चौकीदार ने पकाया था उसके बाद दोनों सोने के लिये लेट गये लेकिन दोनों में से कोई भी ठीक से सो नहीं पाया। क्योंकि भाई किशन बीच बीच में चीख मार कर उठ पड़ते थे लगता था शहर की तबदीली उन्हें कुछ पसन्द नहीं आयी। सुबह तड़के ही दोनों किशन के रोने से उठ गये उसे अच्छा ख़ासा बुख़ार था उन्होंने चौकीदार से शहर के अच्छे डाक्टर के बारे में पूछा और फिर वह और रूपा दोनों किशन को लेकर डाक्टर के घर गये डाक्टर को भी सुबह सुबह उठना पड़ा लेकिन उसने किशन को बड़ी तवज्जे से देखा उसके लिये ढेरों दवाइयाँ लिख दीं दवा वग़ैरह ख़रीद कर वह लोग डाक बंगला वापस आ गये।

मोहन को घर मिल गया उसने जयपुर से अपना सामान मंगवा लिया अब वह और रूपा डाक बंगले से घर में शिफ़्ट हो गये। आज उनको किशन गढ़ में आये हुये आठ रोज़ हो रहे थे लेकिन किशन की तबीयत ठीक होने का नाम ही नहीं ले रही थीं। इस बीच में वह कई डाक्टर भी बदल चुके थे इस वक़्त वह किशन को लेकर एक

नये डाक्टर के पास जा रहे थे। कि रास्ते में रूपा को वहीं मस्जिद नज़र आयी जिसके पास उन लोगों ने पहले दिन चाय पी थी और जहाँ मस्जिद के बाहर औरतें अपने बच्चों को फुंकवाने के लिये खड़ी थीं। रूपा ने मोहन से कहा ज़रा गाड़ी रोकिये क्या है कहरकर मोहन ने गाड़ी रोक दी वह जो आप मस्जिद देख रहे हैं रूपा ने कहा वहाँ नमाज़ के वक़्त बहुत सी औरतें मेरा मतलब है हिन्दू औरतें अपने बच्चों को नामजियों से फुँकवाने आती हैं। जिसकी वजह से उनके बच्चे बीमार नही रहते हैं मैं सोचती हूँ अपने किशन को भी फुँकवा लें इतने दिनों से तो इलाज हो रहा है बेचारा कितना दुबला हो गया है।

क्या बेवकूफ़ी है यह कह कर मोहन ने एक झटके से दोबारह गाड़ी स्टार्ड कर दी उन औरतों का अक़ीदह कितना कमज़ोर होता है, उसने सोचा।

रूपा ने सोचा मोहन उसे इस बात की इजाज़त बिल्कुल नहीं देगा। इसलिये वह किशन को लेकर अकेले ही किसी बहाने आयेगी और उसे मौक़ा मिल ही गया दूसरे रोज़ मोहन ने ड्राइवर से गाड़ी भिजवा दी और उससे कहलवाया कि रूपा गाड़ी लेकर किशन को डाक्टर के यहाँ दिखा लायें उसे आने में देर हो जायेगी।

शाम हो रही थी रूपा ने किशन को गाड़ी में बिठाया और सीधे उस मस्जिद की तरफ़ रवाना हो गयी डाक्टर के यहाँ जाने का उसने इरादा बिल्कुल तबदील कर दिया था जिस वक़्त वह मस्जिद के पास पहुँची नमाज़ ख़त्म हो चुकी थी और नमाज़ी मस्जिद के गेट से बाहर निकलना शुरू हो गये थे। वह किशन को लेकर जल्दी से गाड़ी से उतरी और तक़रीबन दौड़ती हु औरतों की लाईन में लग गयी नमाज़ी बाहर निकलते जाते थे और सब ही बच्चों पर और किशन पर भी दम करते हुये निकलते जाते थे उन्हीं नमाज़ियों में रूपा को एक भयानक शक्ल वाला नज़र आया जिसके गले में बहुत सी मोटे मोटे दाँतों वाली माला पड़ी हुई थी उसने रूपा को घूर कर देखा फिर बोला जा तेरे बच्चे को सेहत दे दूँगा रूपा को उस आदमी को देखकर अजीब सी घबराहट हुई क्या घूर रहा था। उसने सोचा वह डर गयी थी उसने सोच लिया था कि अब वह वहाँ नहीं आयेगी फिर वह किशन को लेकर जल्दी से गाड़ी में बैठ गयी वापस पहुँची तब तक मोहन लौट कर नहीं आया था थोड़ी देर में मोहन भी आ गया आते ही उसने पूछा कि डाक्टर के यहाँ हो आयी हाँ हो आयी रूपा ने मुख़्तसर सा जवाब दिया उस रोज़ किशन रात में एक बार भी नहीं उठा और सुबह उसका बुख़ार भी कम था उसने सोचा यह ज़रूर उस भयानक टाइप के आदमी के दम का असर है। वह बिला वजह उसके बारे में उल्टे सीधे ख़्यालात ला रही थी उसने सोच लिया वह आज फिर मस्जिद जायेगी शाम को जब मोहन कोर्ट से आया तो उसने कहा चलो किशन को दिखा आते हैं रूपा ने उसे समझाया कि वह थका हुआ है मुँह हाथ धोकर वह चाय पिये कुछ आराम करे तब तक वह किशन को लेकर डाक्टर को दिखा आयेगी। अब की भी वह किशन को लिये मस्जिद के बाहर औरतों की लाईन में खड़ी हो गयी इस बार नमाज़ियों में वह भयानक चेहरे वाला नज़र नहीं आ रहा था फिर वह किशन को लेकर जैसे ही गाड़ी स्टार्ड कर रही थी वह न जाने किधर से नमुदार हो गया। अरे हम ने फूँका ही नहीं वह कह रहा था रूपा ने किशन को उसके सामने कर दिया उसने एक ज़ोर की फूँक मारी इतनी ज़ोर की कि रूपा के चेहरे पे गिरे बाल भी कुछ उड़ने लग गये और किशन भी डर कर रोने लगा था।

क्यों बच्चे को कुछ फायदा हुआ वह रूपा से पूछ रहा था जी हाँ बाबा अब बुख़ार कुछ कम हुआ रूपा ने जवाब दिया।

बाबा कहती हो क्या मैं बुड्ढा हूँ लाओ पैसे निकालो उसने रूपा की तरफ़ हाथ बढ़ा दिया और रूपा ने जल्दी से पर्स खोल कर घबराहट में पता नही कितने रूपये उसे पकड़ा दिये। वह आज कल से ज़्यादा डर गयी थी और उसने फिर इरादा कर लिया था कि अब वह दोबारह यहाँ नहीं आयेगी लेकिन जब दूसरे रोज़ उसे किशन की तबियत पहले से और बेहतर लगी तो उसने दोबारह वहाँ जाने की हिम्मत कर ली। उसने सोचा हो सकता है पहुँचे हुये लोग ऐसे ही होते हों और आज जब रूपा वहाँ गयी तो उसने कहा देखो–कल फ़ैसला होने

वाला है अगर मुझे जेल हो गयी तो कल तुम्हारे बच्चे को कौन फूँकेगा फिर वह दोबारह बीमार पड़ जायेगा। और मर भी सकता है हा–हा–हा कह देना मोहन बाबू से दाऊद खान का ज़रा सोच कर फैसला करें फिर वह वहाँ से चल दिया।

उस रोज़ रूपा को रात भर नींद नही आयी वह चौंक कर उठ बैठी और फिर किशन पर नज़र डाली वह बहुत इत्मिनान से सो रहा था। सुबह किशन अब पहले से बहुत बेहतर नज़र आ रहा था। मोहन बोला यह पान्डे तो अच्छा डाक्टर है देखो तीन रोज़ में किशन कितना अच्छा हो गया क्या मालूम था वरना शुरू से किशन को उसी को दिखाते यह पान्डे की वजह से नहीं ठीक हुआ बल्कि यह तो मस्जिद वाले बाबा का कमाल है।

क्या मतलब मोहन ने उससे पूछा मतलब यह कि तीन रोज़ से हम डाक्टर पान्डे के यहाँ गये ही नहीं मैं तो इसे मस्जिद फुँकवाने ले जाती थी और यह उस बाबा की फूँक का असर है जो किशन ठीक हो रहा है।

अच्छा मोहन किसी गहरी सोच में डूब गया वाक़ई इन तीन दिनों में किशन की तबियत कहीं बेहतर हो गयी थी। कितने रोज़ किशन को और ले जाओगी। बस चार रोज़ औरतें बताती हैं एक हफ़्ते में बच्चे बिल्कुल ठीक हो जाते हैं।

ठीक है कल हम भी चलेंगे तुम्हारे साथ रूपा बहुत फ़िक्र मन्द नज़र आ रही थी। फिर बोली आज तुम्हें दाऊद ख़ान को बरी करना होग क्या मतलब है तुम्हारा तुम दाऊद खान को कैसे जानती हो अरे दाऊद ख़ान ही तो मस्जिद वाला बाबा है जिसकी फूँक से किशन ठीक हो रहा है। अगर उसे सज़ा हो गयी तो वह फिर जेल चला जायेगा फिर किशन का क्या होगा।

सुनो रूपा दाऊद ख़ान ज़ालिम इन्सान है। जिसने जायदाद के लिये अपने सगे भाई का क़त्ल किया उसको मैं बरी कर दूँ। और ऐसे ज़ालिम आदमी की फूँक का कुछ असर होगा रूपा तुम पागल हो गयी हो दाऊद ख़ान का फैसला लिखा जा चुका है। और उसे मैं नही बदलूँगा और अब इस सिलसिले मैं कुछ नहीं सुनना चाहता, मोहन एक झटके से खड़ा हो गया।

दूसरे रोज़ मोहन ने अपने फ़ैसले में दाऊद ख़ान के लिये फाँसी का हुक्म सुना दिया इस रोज़ रूपा मस्जिद नहीं गयी थी। अब क्या करती जाकर मस्जिद वाला बाबा यानी दाऊद ख़ान तो जेल में होगा कई रोज़ बीत गये वह मस्जिद नही गयी एक अजीब व ग़रीब बात यह हुई कि किशन की तबियत फिर ख़राब होने लगी डाक्टर पान्डे का इलाज फिर शुरू हो गया लेकिन कोई फ़ायदा नहीं हुआ। मोहन सोचने लगा क्या वाक़ई दाऊद ख़ान जैसे सिफ़ाक़ आदमी की फूँक और दुआओं में कुछ असर था मेरा किशन तो इन तीन दिनों में बिलकुल ही ठीक हो गया था नहीं हो ही नही सकता बिल्कुल ग़लत उसने अपने दिल को समझाया। वह तो ज़ालिम था एक मुजरिम था। उसकी फूँक में क्या असर होगा रूपा आज हम किशन को लेकर उस मस्जिद चलेंगे।

क्या फ़ायदा बाबा तो जेल में है लेकिन फिर भी हम मस्जिद चलेंगे।

शाम को वह दोनों किशन को लेकर मस्जिद चले गये। मोहन गाड़ी में बैठा रहा और रूपा किशन को लेकर मस्जिद के बाहर खड़ी हो गयी नमाज़ ख़त्म हो गयी नमाज़ी बाहर निकलते जाते थे और सब बच्चों के साथ साथ किशन को भी फूँकते जाते थे।

अब मोहन और रूपा किशन को लेकर रोज़ ही मस्जिद आते थे।

आज तीसरा रोज़ था और किशन की तबियत बहुत हद तक ठीक हो गयी थी एक हफ़्ते में किशन बिल्कुल भला चंगा हो गया था।

और पहले की तरह किलकारियाँ मारने लगा था रूपा डारलिंग मोहन ने कहा इन नमाज़ियों में ज़रूर कोई न कोई पहुँचे हुये होंगे उन ही की दुआओं के असर से हमारा किशन ठीक हुआ है।

हाँ यही बात है रूपा ने कहा मोहन बोला और यह कमबख़्त दाऊद खान ख़्वाह–मख़्वाह सारा क्रेडिट खुद

लिये जा रहा था। हाँ कितना डरवाना था रूपा जैसे सहेम गयी कब लटकेगा फाँसी पर वह बड़बडाई।

एक रोज़ मोहन उस मस्जिद के सामने से गुज़र रहा था जुमे का दिन था और मस्जिद के आंगन में चुलचुलाती धूप में नमाज़ी बैठे हुये थे। मोहन ने सोचा कितनी तक़लीफ़ में यह लोग बैठे हैं क्या ही अच्छा होता जो आँगन में शामयाना लगा होता कितनी सख़्त धूप है।

शाम को वह मखदूम साहब के यहाँ गया मख़दूम साहब मछलियों के ठेके लेते थे वही उनके मकान के नज़दीक ही रहते थे। सारे ही बड़े बड़े अफ़सरों के यहाँ वह मछली पहुँचाया करते थे कहीं तड़पती हुई ज़िन्दा तो कहीं शोरबा में डबाड़बा मखदूम साहब आप कम से कम जुमा की नमाज़ तो पढ़ते ही होंगे जी हाँ बिल्कुल बजा फरमाया।

वह वहीं टिल्लू का जो होटल है उसके पास वाली मस्जिद में जी हाँ बिल्कुल आज आप जुमा पढ़ने गये थे जी हाँ गये थे। अन्दर जगह मिल गयी थी यह आप ने धूप में नमाज़ पढी–जी जनाब हमेशा ऐन वक़्त पर पहुँचने वाले को अन्दर जगह कहाँ मिलती है। जनाब सोच लीजिये खोपड़ी चिटख गयी और फिर गरम गरम फर्श पर झुलस्ते रहे।

जुमे को बाहर शामयाना क्यों नही लगवा लेते। जी शामयाने का किराया दो सौ रूपया रोज़ का होता है। कहाँ से आयेगा चन्दा के नाम पर दम निकलता है लोगों का हर जुमे को नमाज़ियों के सफ़ में मोअज़्ज़िन साहब खुला डिब्बा हिलाया करते हैं। और सब दम साधे बैठे रहते हैं और अगर किसी ने दस पैसे भी डाल दिये इतनी ज़ोर से खटाक से डालेगा कि मानो अठन्नी का गुमान हो अब बताइये कहाँ से इतना रूपया जमा हो पायेगा कि हर जुमा को शामयाना लगा सकें। मोहन बोला मख़दूम साहब मेरा किशन इस मस्जिद के नमाज़ियों की दुआओं से ठीक हुआ है यह एक हज़ार रूपया हाज़िर है आप अपनी तरफ़ से उसे मस्जिद के डिब्बे में डाल दें कम अज़कम पाँच जुमे तक तो मस्जिद में शामयाना लग ही सकता है और इसके बाद तो बारिश का मौसम शुरू हो जायेगा जिससे गर्मी का असर भी कम हो जायेगा जी यह तो आप बहुत सवाब का काम कर रहे हैं। बड़ा पुन्य का काम है मख़दूम साहब ने हिन्दी झाड़ दी।

मोहन ने उन्हें एक हज़ार रूपये दिये और कहा कि वह आज ही रूपया मस्जिद के डिब्बे में डाल आये और जुमा का इन्तिज़ार न करें इससे यह होगा कि अगले जुमे से शामयाना लगना शुरू हो जायेगा। मोहन के चले जाने के बाद मख़दूम साहब अपनी बेगम से बोले देखो तो कितना भला आदमी है हिन्दु होकर मस्जिद के लिये पैसा दे गया।

दूसरे दिन सुबह मखदूम साहब एक हज़ार रूपये जेब में डालकर मस्जिद की तरफ़ रवाना हुये मस्जिद के मोअज़्ज़िन साहब उन्हें मस्जिद के बरआमदे में टहलते हुये मिल गये अरे भाई मखदूम खैरियत तो आज जुमा नही है कैसे भूल पड़े।

जी जनाब मुल्ला जी जुमा की नमाज़ में धूप में नमाज़ियों को बड़ी तक़लीफ़ होती है इसलिये चन्दे के डिब्बे में रूपया डालने आया हूँ। कि कमअज़कम अगले जुमे से तो शामयाना लग जाये।

वाह जनाब बड़े नेक इरादे हैं ज़रूर पैसे डालिये लेकिन शामयाना लगने का इन्तिज़ाम हो गया किराये का शामयाना नहीं बल्कि अहमद भाई नगीना वाले ने पूरा शामयाना ही ख़रीद कर मस्जिद को दे दिया है। वह तो रूपया दे रहे थे लेकिन मैंने कहा नहीं आप शामयाना ही ख़रीद कर दे दें कितने दीनदार आदमी हैं कितने हौसले के। अल्लाह उनको भी तरक़्क़ी दे मुल्ला जी भाई नगीना वाले को ढेरों दुआएँ देने लगे।

मख़दूम साहब बोले जी इन्तिज़ाम हो गया यानी कि वाक़ई हो गया वाह माशा अल्लाह यानी की अगले जुमे से शामयाना लगना शुरू हो जायेगा। वाह वाह कितना हिम्मत वाला आदमी है यह अहमद भाई। मख़दूम साहब मस्जिद में एक तरफ़ कोने में रखे हुये चन्दे के डिब्बे की तरफ़ पहुँच गये। उन्होंने एक हज़ार रूपये निकाल

कर दोबारह गिने। और उसकी चार पाँच तह कीं कि वह आसानी से डिब्बे में चला जाये शामयाने का इन्तिज़ाम तो हो गया अब इन पैसों का क्या होगा उन्होंने सोचा उनके दिल व दिमाग़ में कशमाकश शुरू हो गयी। मस्जिद के पचासों काम रहते हैं पुताई, मरम्मत यह इसमें आ सकते हैं लेकिन अब इस मुल्ला का क्या भरोसा हो सकता है कि यह रूपया उसकी जेब में जाये। नहीं मुल्ला जी बहुत ईमानदार आदमी हैं। उनके बारे में ऐसा सोचना बड़ा ग़लत है ग़लत कुछ नहीं नियत का कोई भरोसा नही नियत बदलते कुछ देर नहीं लगती उन्होंने अपनी खशख़शी दाढ़ी खुजलाते हुये सोचा फिर दूसरी जेब से एक कड़कड़ाता हुआ दस रूपये का नोट निकाल कर डिब्बे में डाल दिया मख़दूम साहब आख़िर आप कितने रूपये डाल रहे हैं। जो अब तक ख़त्म होने को नहीं आते मुल्ला जी ने उन्हें आवाज़ लगायी अजी आया मख़दूम साहब ने एक हज़ार रूपये अपनी जेब में दोबारह डाल लिये।

इस दोपहर में कहाँ जा रहे हैं आज तो पन्द्रह अगस्त की छुट्टी का दिन है रूपा ने मोहन से पूछा अरे आज जुमा भी तो है उस मस्जिद में जा रहा हूँ देखने कि शामयाना लगा भी कि नहीं उस मख़दूम का कोई भरोसा नही क्या पता रूपया खा गया हो।

अरे खायेंगे क्यों वह भी मस्जिद का रूपया वह तो उनके नज़दीक़ बहुत बड़ा पाप होगा।

रूपा डियर तुम बहुत भोली हो मैं आदमियों को खूब पहचानता हूँ वह तो जल्दी में उसे रूपया दे आया था मुझे किसी और से भिजवाना चाहिये था। अब अगर शामयाना नहीं भी लगा होगा तो अपना इल्ज़ाम किसी और के सर कर देगा।

रूपा बोली आप मजिस्ट्रेट क्या हैं हर एक को शक की निगाह से देखते हैं मोहन ने मस्जिद से थोड़ी दूर पर अपनी गाडी रोक दी थी नया बड़े बड़े फूलों वाला खूबसूरत शामयाना मस्जिद के आँगन में तना हुआ था। मोहन को फर्ख़ का एहसास हुआ कि उसकी वजह से कितने नमाज़ियों को राहत मिली उसने गाड़ी वापस घर की तरफ़ मोड़ दी और सोचने लगा बेचारे मख़दूम पर बिला वजह शक किया।

.....☆.....